Indian Streams Reserach Journal
Vol.1,Issue.XII/Jan; 12pp.1-4
डॉ. विनोद कुमार
ISSN:-2230-7850

Research Papers

भारतीय साहित्य और सुशासनतन्त्र

डॉ. विनोद कुमार
लायलपुर खालसा कॉलेज़ जालन्धर (पंजाब)
डॉ. (श्रीमति) नीरज शर्मा
कन्यामहाविद्यालय़ जालन्धर (पंजाब)

प्रस्तावना :–

सुशासनतन्त्र से तात्पर्य शासन का एक ऐसा तन्त्र जिसमें अच्छी नीर्तीनिर्माण और उसके कुशल कार्यान्वयन से सुवव्यवस्था स्थापित की जाए, सुशासन वर्तमान शव्दावली है लेकिन यह तवसे चला आ रहा है जवसे समाज का विकास हुआ है, इसको ही लोकराज़ स्वराज और सुराज का नाम दिया गया और महात्मा गांधी ने रामराज्य के आदर्श राज्य के रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया, गांधीजी का यह कथन है कि "हम राज्य को रामराज्य तभी कह सकते हैं जव राजा और प्रजा दोनों सरल हो जव राज और प्रजा दोनों के हृदय पवित्र हों जव दोनों त्यागवृत्ति रखते हों भोगों का सुख उठाते हुए भी संकोच और संयम रखते हों

राजा या राज्य के अधिकारी जैसें होंगे प्रजा भी वैसी ही होगी, इसी लिए राजकर्मचारियों को अपने आचार का नैतिक स्तर ऊंच रखने की वात की जाती है ताकि वह जनता के लिए एक आदर्श हो सके, शास्त्रों में ऐसे निर्देश प्रायः सुलभ हैं कि राज और प्रजा दोनों का आचरण शुध्द हो, सत्य अहिंसा अस्तेय अपरिग्रह ह्यआवश्यकता से अधिक धन का संग्रह नहींह और ब्रम्हचर्य आचार आदि नियमों का उल्लेख वेद पुराण उपनिषद् जैन ग्रन्थों वौध्द ग्रन्थों वैष्णव तथा अन्यान्य ग्रन्थों आदि में मिलता है,

वैदिक साहित्य

हमारी अमूल्य विरासत के संरक्षक वैदिक साहित्य में जर्नशासन के स्पष्ट संकेत मिलते हैं, अर्थवेदक में प्रजा मेंब्राम्हण क्षत्रिय़ वैश्य़ शूद्र और निषाद अथवा अतिशूद्र जनों का विवरण है, साथ ही यह भी कहा गया है कि प्रजा के हित में राजा का हित निहित है, ह्य**3 . 3 . 5**ह अन्यत्र कहा गया है कि राज का कर्तव्य है कि उसके राष्ट्र में कोई भूर्खाप्यासा न रहे, ह्य**2 . 29 . 4**ह सर्वदा ऐसे करे जो उसे जर्नप्रिय वनाए क्योंकि तभी उसका राज्य स्थिर रह सकता है और राजाप्रजा दोनों मिलकर राज्य को उन्नति के मार्ग पर ले जा सकते हैं, राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए अनेक सभाओं आदि का निर्माण किया जाता था, यथा

त्रीणिं राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूपथः सदांसि , ऋ . म . **3**सू . **38**म . झो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहें तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करें, जिसलिये अकेला राज स्वाधीन व उन्मत होके प्रजा का नाशक होता है अर्थात वह राज प्रजा को खाये जाता है इसलिये किसी को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिये, जैसे सिंह वा मांसाहारी हृष्ट पुष्ट पशु को मारकर खा लेते हैं वैसे स्वतन्त्र राज प्रजा का नाश करता है अर्थात किसी को अपने से अधिक न होने देता श्रीमान को लूट खूंट अन्याय से दण्ड दे के अपना प्रयोजन पूरा करेगा, इसलिये

इन्द्रा जयाति न परां जयाता अधिराजो रायसु राजयातै,

गांधी के आदर्श रामराज्य में पंचायत का अपना महत्त्व है जिसे वैदिक साहित्य भी स्वीकार करता है और जो आजके समय के जनलोकपाल की सदृढ़ता के आधार स्तम्भ रूप में देखी जा सकती है, वैदिक काल से ही ग्राम को प्रशासन की मौलिक इकाई माना जाता रहा है, जातक ग्रंथ में भी ग्राम सभाओं का वर्णन मिलता है, उत्तर वैदिक काल में भी एक सामूहिक राजनीतिक इकाई के रूप में ग्राम का महत्त्व रहा है, लघु गणराज्यों के रूप में हिन्दूमुस्लिम तथा पेशवा शासन कालमें ग्राम पंचायतों का विशेष महत्त्व रहा है, अथर्ववेद ह्य**8**.**9**।**10**।**12**ह के अनुसार

'सा उदकामत सा समायां न्यकामत,
शा उदकामत सा समितौयां न्यकामत,

कौटिल्य

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सुशासन के दस निर्देशक तत्व प्राप्त होते हैं, कौटिल्य कहता है कि "राज राज्य का सेवक है जिसकी अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा नही होती," यह वर्तमान सुशासन के लिए महत्त्वपूर्ण सुझाव है क्योंकि आज के तृतीय विश्व के देशों में राजसेवक सामान्य जनता के सामने स्वामी के रूप कार्य करते हैं, कौटिल्य भ्रष्ट अधिकारियों के विरूध्द दण्ड की वात करता है, शास्त्रों मे वर्णित पहला चरण नियुक्ति का है, जहॉ यह लिखा मिलता है कि राज को सुपात्र

की नियुक्ति करनी चाहिए, कौटिल्य ने भी अधिकारियों की नियुक्ति के लिए चार परीक्षाओं का उल्लेख किया है, एक अन्य स्थान पर राजकीय अधिकारियों के चालचलन की परीक्षा कर पदों पर नियुक्त करने की वात की गई है, राजकीय उच्चाधिकारियों को अमात्य के गुणों से युक्त होना चाहिए योग्यता और कार्य क्षमता के आधार पर ही उन्हें भिन्न भिन्न पदों पर नियुक्त किया जाना चाहिए, उसने राज्य शासर्नसंचालन में परामर्श के लिए योग्य अमात्यों की नियुक्ति के वारे में निर्देश देते हुए लिखा है कि राजा गुण देर्शकाल और कार्योचित व्यवस्था देखकर उनकी मन्त्रीपदों पर नियुक्त करे

विभज्यामात्माविभवं देशकालोच कर्मच
अमात्याः सर्व कार्याः स्युर्न तु मन्त्रिण
ह्य1.8.38ह

नियुक्ति के वाद समय समय पर उनकी निगरानी की वात भी कही गई है क्योंकि उनकी धारणा है कि मनष्यि की चित्तवृतियां हमेशा एक सी नहीं होती, इस विषय में तीन श्लोक ह्यकौटिलीय अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण ह्यविनयाधिकारिकाह प्रासंगिक हैं

प्रजासुखे सुखं राजः प्रजांना च हिते हितम,
नात्मप्रियं हितं राजः प्रजांना तु प्रियं हितम,

प्रजा के सुख में राज का सुख निहित हैल अर्थात जव प्रजा सुखी अनुभव करे तभी राज को संतोष करना चाहिए, प्रजा का हित ही राज का वास्तविक हित है, वैयक्तिक स्तर पर राज को जो अच्छा लगे उसमें उसे अपना हित न देखना चाहिए वल्कि प्रजा को जो ठीक लगे यानी जिसके हितकर होने का प्रजा अनुमोदन करे उसे ही राज अपना हित समझे,

महाभारत

महाभारत के शान्ति पर्व में कुपात्र और सुपात्र की नियुक्ति के सन्दर्भ में ऋषि और कुक्कुर की कहानी लिखी गयी है जिसमें ऋषि कुत्ते को चीते से भयभीत होने पर उसे चीता वना देता है फिर उसे वाघ के भय से वाघ वनाता फिर गजराज और शेर वनाता है लेकिन जव शाम अपने निर्माण ऋषि पर झपटता है तो वह उसे वापस कुत्ता वना देता हैं, यहॉ यह वताने का प्रयास किया गया है कि कुपात्र से स्वयं का ही खतरा रहता है, अतः हमेशा सुपात्र की नियुक्ति करनी चाहिए, यहॉ आगे ह्यशान्ति पर्व116117ह सेवकों के योग्यता के गुणों का उल्लेख किया गया है जहॉ लिखा है कि वुध्दिमान राज को चाहिए कि वह सेवकों की सच्चाई शुध्दता सरलता स्वभाव शास्त्रज्ञान सदाचार कुलीनता जितेन्द्रिय दया वल पराकम प्रभाव विनम्र तथा क्षमा आदि का पता लगाकर जो सेवक जिस कार्य के योग्य जान पड़े उन्हें उसी कार्य में लगाना चाहिए, किसी भी राज या शासक के कर्तव्यों की एक विस्तृत सूची है, नरर्दयुधिष्ठिर संवाद में नरद ने कुल **123** पश्न किये जो अपने आप में एक पूर्ण व समृध्द प्रशासनिक आचार संहिता है, यह प्रश्न जितने प्रासंगिक महाभारत काल में थे उतने या उससे भी अधिक आज भी हैं, व्यास ने इन प्रश्नों के माध्यम से न केवल राजाओं या प्रशासकों को उनके कर्तव्यों का वोध कराया परंतु आम प्रजा को भी जागृत किया कि उन्हें प्रशासकों से किस प्रकार की अपेक्षाएं करनी चाहिए, वर्तमान में यदि हम सुशासन के लिए कोई कार्य योजना वनाना चाहते हैं तो नरद के प्रश्नों के संदर्भ सुन्दर मार्गदर्शन की क्षमता रखते हैं,

महाभारत में कहा गया है 'यदि किसी राजसभा में दुखों व अन्याय से पीड़ित व्यक्ति न्याय मांगने के लिए जाता है तो वह जलती हुई आग के समान होता है, उस समय सभासदों का यह कर्तव्य होता है कि वे उसकी पीड़ा की स्वयं अनुभूति कर अविलंव उसे न्याय दिलाएं, यदि सभासद ऐसा नहीं करते तो वे स्वयं उस अन्यायरूपी अधर्म के भागी वनते हैं, पांडव वनवास का देश झेल रहे थे, गुप्त रूप से सौरंध्री नाम से द्रोपदी राज विराट की रानी की सेविका का कार्य कर रही थी, कीचक के द्रोपदी के साथ किए दृष्कृत्य को जव राज विराट अनदेखा करता रहा तो द्रोपदी ने विराट को चुनौती देते हुए कहा न राज राजवत किंचित समाचरति कीचके, दस्यूनामिव धर्मस्ते न हि संसदि शोभते,' यानी राज का धर्म अन्यार्यी अत्याचारी को दंड देना है किंतु तुम कीचक के दृष्कृत्यों को मूक वनकर देखते रहे हो उसे दंड नहीं दिया, यह तो तुम राजधर्म की जगह अधर्म कर रहे हो तो तुम्हें इस का भागी वनन ही होगा,' एक अन्य प्रसंग ह्यशान्तिपर्व **57.42**ह में भीष्म पितामह धर्मराज युधिष्ठिर से कहते हैं

तद्राज्ये राज्यकामनां नान्यो धर्मः सनातन ः
ऋते रक्षां तु विस्पष्टां रक्षा लोकस्य धारिणी,

अर्थात राज्य की कामना करने वालों के लिए प्रजा रक्षा को धारण करना होता है तभी वह अधिकारी हो सकता है,

गोस्वामी तुलसीदास

तुलसी ने भारतीय संस्कृति एवं युग जीवन का विशदप्रतिविम्व और सर्वोदय रामराज्य की स्थापना का महान संदेश अवधपति राम के माध्यम से प्रस्तुत किया, 'नहि दरिद्र होउ दुःखी न दीना के माध्यम से तुलसी से रामराज्य का लोक कल्याणकारी रूप वर्णित करके उसे युर्गयुग के लिए एक प्रेरणास्पद आदर्श वना दिया, 'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ते नर अवसि नरक अधिकारी' के प्रति वह सदैव सचेत रहे, इस प्रकार सरल स्वभाव वाले सात्विक गुणों के पंजीभूत रूप राम सृष्टि रूप में शुभ का प्रतीक वन गए, मन वचन कर्म से पवित्र भारतीय संस्कृति के साक्षात स्वरूप श्रीराम ने समस्त भारतवर्ष को इस प्रकार सुश्रृखंलित कर दिया कि आज तक उनके आदर्श रामराज्य की गाथा गायी जाती है,

आज तक उनके आदर्श रामराज्य की गाथा गायी जाती है, 'रामचरितमानस' में राजनीतिपरक मूल्यों का तुलसीदास जी ने विशदनिरूपण किया है, 'रामचरितमानस' में तुलसी ने तत्कालीन मुगलप्रशासन तंत्र का चित्रण कलियुग के वर्णन के रूप में उत्तरखंड में किया है, उन्होंने नृपतंत्र के रूप में दशरथ के शासनतंत्र की मर्यादाएँ वताई हैं तो दूसरी ओर जनक जैसे दार्शनिक तथा त्यागी सम्राट के राज्य संचालन को भी वर्णित किया है, किन्तु तुलसीदास राम के शासनतंत्र के समर्थक और रावण के शासनतंत्र के विरोधी हैं, तुलसी ने राज को प्रजा का प्रतिनिधि माना है, राज की सर्वोपरि सत्ता को स्वीकार करते हुए भी उन्होंने उसकी निरंकुशता को सह्य नहीं माना है, उन्होंने उसी शासक को सच्चा शासक माना है,

'राजा' को मुख समान होकर सव विधि प्रजा का पोषण करना चाहिए' इस वात पर जोर देते हुए कहा है कि

मुखिया मुख सा चाहिए खान पान को एक
पालहिंपोषहिं सकल अंग तुलसी सहित विवेक,
ह्यदोहावली **522**ह

तुलसीदास ने इसके लिए 'रार्मराज्य' अथवा कल्यार्णराज्य का आदर्श प्रस्तुत किया है, यह कल्याणकारी राज्य धर्म का राज्य होता है न्याय का राज्य होता है कर्तव्य पालन का राज्य होता है,

वह सत्ता का नहीं सेवा का राज्य होता है, इस कल्याणकारी राज्य की झोली में हैं क्षमा समानता सत्य त्याग वैर का अभाव वलिदान एवं प्रजा का सर्वांगीण उत्कर्ष, कल्याणकारी राज्य में व्यक्तिगत स्वातंत्र्य का वहुत वड़ा महत्त्व है, रार्मराज्य एक तरह से प्रजातंत्रात्मक राज्य था, उसकी प्रजा को संपूर्ण स्वातंत्र्य था, अतः लोग निर्भीक होकर रानी कैकेयी के कलुषित कार्यो की आलोचना कर सकते थे, यहॉ तक कि राम के व्यक्तिगत जीवन की भी, प्रजा की भावना का आदर करते हुए राम ने सीता का परित्याग किया इससे वकर शायद ही कोई सवूत किसी राज की प्रर्जाप्रियता एवं महानता का मिल सके राम 'उत्तरकांड में अपनी प्रजा से वातें करते समय कहते हैं

जो अनीति कुछ भाखौं भाई, तो मोहू वरजहु
भयय विसराई,
अंधेर नगर्रीचौपट राज

आधुनिक साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अपनी नाटिका 'अंधेर नगरी चौपट राजा' के माध्यम से यह व्यंजित करते हैं कि जहॉ पर राज अपने राज्याधिकार और सम्वध्द कर्तव्य को समझने में असमर्थ एवं असफल रहे उसे दुर्गित को भोगना ही पड़ता है, नाटिका के अन्तिम भाग का दृश्य देखने योग्य है जहॉ राज भवन की स्थिति को दर्शाया गया है, यहां पर मदिरापान चमचागिरी

दरबारियों के मूर्खता भरे प्रश्न और राज का अटपटा व्यवहार इस दृश्य की विशेषता है, अंतिम दृश्य में फांसी पर चने की होड़ को बखूबी दर्शाया गया है, इस दृश्य का अंत एक संदेश के साथ होता है,

जहॉ न धर्म न बुध्दि नहिं नीति न सुजन

तीखा व्यंग इस नाटक की विशेषता है, सत्ता की विवेकहीनता पर कटाक्ष किया गया है, भ्रष्टाचारा सत्ता की जड़ता उसकी निरंकुशता अन्याय पर आधारित मूल्यहीन व्यवस्था को बहुत ही कुशलता से उभारा गया है, साथ ही यह संदेश भी दिया गया है कि अविवेकी सत्ताधारी की परिणति अच्छी नहीं होती, साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य है कि ताका कै परिणति के लिए आम जन की विशिष्ट भूमिका रहती है,

निष्कर्षतः यदि हमें आज के समय में कहीं किसी रूप में जनलोकतन्त्र की स्थापना का स्वप्न साकार करना है तो हमें अपनी संस्कृति और साहित्य से प्रेरणा और निर्देश प्राप्त करना अत्यन्त महत्त्वशाली है,